Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 13, Issue 1 | May 2025 - October 2025 | pp. 54-58

भारत एक लोकतांत्रिक विकासात्मक एवं कल्याणकारी राज्य

डॉ. पी.सी. जाट

आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय एल.बी.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटपूतली, जयपुर (राजस्थान)

रेणु कुमारी

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

भारत एक लोकतांत्रिक, विकासात्मक कल्याणकारी राज्य के रूप एक अपनी विशेष पहचान बनाएँ हुए है। एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में सामाजिक न्याय, राजनीतिक स्वतंत्रता एवं कल्याणकारी प्रगति को एक साथ आपस में जोड़ने का प्रयास करता हैं। भारत एक लोकतांत्रिक, विकासात्मक कल्याणकारी राज्य होने के कारण सामाजिक, राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक सुधारों की बाध्यताओं एक अच्छा संयोजन है। भारत का विकासात्मक, लोकतांत्रिक और एक कल्याणकारी राज्य के रूप में एक बहुत बड़ा कठिन इतिहास रहा है। क्योंकि इसमें अनेक समस्याएँ पैदा हुई। ये समस्याएँ देश के संविधान के निर्माण के समय ही सामने आना शुरू हो गई। इस लेख में लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य को परिभाषित कर उनकी विशेषताओं के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत लेख में लोकतांत्रिक विकासात्मक एवं कल्याणकारी राज्य के आपसी संबंधों का अध्ययन किया गया है तथा राज्य द्वारा संचालित कल्याणकारी कार्यक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। एक लोकतांत्रिक विकासात्मक एवं कल्याणकारी राज्य के सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन कर इनके सुधार हेतु सुझावों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यह लेख भारत के संदर्भ में लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य की प्रकृति का मूल्यांकन करता है। भारतीय राज्य की प्रकृति का मुद्दा स्वतंत्रता पश्चात् बहुत ज्यादा विचार विमर्श के केन्द्र में रहा है। यह लेख भारत का अध्ययन लोकतांत्रिक विकासात्मक राज्य के विशेष संदर्भ पर आधारित किया गया है।

संकेताक्षर—*विकासात्मक राज्य, सामाजिक लोकतंत्र, कल्याणकारी राज्य, आदेशित अर्थव्यवस्था, कल्याणकारी योजनाएँ*

प्रस्तावना

भारत एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य है। एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य एक ऐसा राज्य होता है जिसमें नागरिकों को वोट देने का अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार अर्थात् राजनीतिक अधिकार प्राप्त होता है। यह एक ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें जनता अपने इच्छा अनुसार प्रतिनिधियों को चुनती है। इसके साथ ही यह शासन राज्य की अर्थव्यवस्था में अपना पूर्ण हस्तक्षेप करता है और राज्य में आर्थिक सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के लिए योजना बनाता लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य एक ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें देश के नागरिकों के आर्थिक कल्याण को सुरक्षित रखने के लिए लोकतंत्र एवं कल्याणकारी नीतियों को एकजुट करती है। एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य केवल सुरक्षा एवं न्याय तक ही नहीं सीमित रहता बल्कि नागरिकों के उनके सर्वांगीण विकास को भी बढ़ावा देता हैं। एक लोकतांत्रिक विकासात्मक राज्य में नागरिकों को देश की राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार प्रदान करता है। जिससे जनता की शासन निर्माण में पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित की जा सकें। एक विकासात्मक राज्य में देश को एक समावेशी विकास राज्य बनाने का लक्ष्य रखा जाता है। जिससे राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देना

है। एक कल्याणकारी राज्य देश में नागरिकों की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने एवं उनको सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता है। एक कल्याणकारी राज्य का प्रमुख उद्देश्य होता है कि वह देश के नागरिकों के सामाजिक और आर्थिक कल्याण को सुरक्षित रखे व साथ ही उसको प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाये। एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में देश के सभी नागरिकों एक अच्छा और गरिमापूर्ण जीवन जीने का अवसर प्रदान करें। इसके साथ ही देश के नागरिकों को शिक्षा, उनके स्वास्थ्य की देखरेख और साथ ही उनकी रोजगार जैसी आवश्यक सेवाओं तक संभालता है। देश में नागरिकों के मध्य समाज में समानता और न्याय की भावना को स्थापित करता हैं। एक कल्याणकारी राज्य देश के नागरिकों को बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध करवाता है। जिसके कारण देश के नागरिकों को समान अवसर प्राप्त होते हैं। जिससे देश के नागरिकों को एक मान-सम्मान का गरिमापूर्ण जीवनयापन करने का अवसर प्राप्त होता है।

लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य की विशेषताएँ

एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य को स्पष्ट रूप से समझने के लिए हम इनकी विशेषताओं को समझेंगे—

- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में देश के नागरिकों को राजनीतिक गतिविधियों और उनके नीति-निर्माण प्रक्रियाओं में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य एक बहुदलीय लोकतांत्रिक राज्य है। जो अपने देश के नागरिकों को अपनी सरकार चुनने का अधिकार देती है।
- लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य बदलती हुई परिस्थितियों के साथ अपने-आप को सुधारने की क्षमता रखता है। अर्थात् इस प्रकार से राज्य में लचीलापन पाया जाता है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य देश की अर्थव्यवस्था में अपना पूरा हस्तक्षेप करता है जिससे देश के सामाजिक और आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक राज्य में व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता की सुरक्षा की मौलिक अधिकारों के रूप में गारंटी प्रदान की जाती है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया को मजबूत बनाता है। जिससे देश के विकास और शासन कार्यों में स्थानीय स्तर पर भागीदारी को बढ़ाता है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में सरकार राज्य में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से योजना बनाती है।
- लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य का निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में मिश्रित अवस्था में अपना एक सह अस्तित्व होता है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए नई-नई विकास की नीतियाँ बनता व उनको लागू करता है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य देश के नागरिकों को कानून व्यवस्था जैसी बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध करवाता है।

हमारे भारतीय राज्य की प्रकृति में स्वतंत्रता के पश्चात् बहुत ज्यादा वाद-विवाद उत्पन्न हुआ, परन्तु इन विभिन्नताओं के बाद देश के विकास का विचार राज्य की नीति का मार्गदर्शी सिद्धान्त रहा है। एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य भारत में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के विभिन्न चरणों में नीति प्रतिमानों में विविधता आई जैसे भारतीय समाजवाद से भारतीय व्यापारिक उदारवाद सन् 1950 से 1991 तक के काल को देश में नियोजित आर्थिक विकास के रूप में जाना जाता है, जिसे देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के द्वारा शुरू किया गया। भारत में सन् 1991 के उपरांत का काल उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के रूप में विशेष रूप से जाना जाता है। भारत में इन परिवर्तनों के बावजूद भारतीय अभिजात वर्ग अपना सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य विकास को ही मानते है। भारत के इस विकास के विचार का महत्वपूर्ण केन्द्र बिंदु संलग्न क्षेत्रों की वृद्धि के साथ-साथ देश में औद्योगिक और कृषि का विकास करना था। देश के इन विकास के उद्देश्यों के साथ ही लोक-कल्याणकारी लक्ष्यों पर बल दिया गया। इस प्रकार से भारत को एक विकासात्मक राज्य के रूप में वर्णित किया जा सकता है। यह लेख भारत का अध्ययन एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य के विषय

विशेष संदर्भ पर आधारित है। इस लेख में हम लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य की परिभाषा और विशेषताओं को समझते हुए एक लोकतांत्रिक विकासात्मक राज्य एवं एक कल्याणकारी राज्य के मध्य संबंधों का अध्ययन करते हुए कल्याणकारी कार्यक्रमों को समझते हुए उनके सामने आने वाली चुनौतियों को समझेंगे। इन चुनौतियों को समझते हुए इनमें होने वाले सुधारों का अध्ययन करेंगे। एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य के इस लेख के सबसे अंत में हम इस लेख का निष्कर्ष प्रस्तुत करेंगे।

लोकतांत्रिक विकासात्मक राज्य एवं कल्याणकारी राज्य के मध्य संबंध

एक लोकतांत्रिक विकासात्मक राज्य व कल्याणकारी राज्य के मध्य एक गहरा संबंध है ये आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए है। लोकतंत्र नागरिकों को विकास और कल्याण की माँग करने का अधिकार प्रदान करता है जबकि एक कल्याणकारी राज्य और विकासात्मक राज्य के लक्ष्य लोकतंत्र को मजबूत करते है।

- एक कल्याणकारी राज्य नागरिकों को सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा जैसी आवश्यक सेवाएँ प्रदान करके नागरिकों को आर्थिक और सामाजिक भलाई करने का प्रयास करता है।
- एक विकासात्मक राज्य का लक्ष्य है कि वह मानव और भौतिक संसाधनों के विकास पर अपना ध्यान केंद्रित करती है। जैसे- स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार करना, समावेशी नीतियों को विकसित करना।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य संचालित करता है जिसमें सरकार पर अपने लोगों को आर्थिक और सामाजिक भलाई के लिए काम करने का दबाव बनता है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य नागरिकों के सभी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक अधिकारों की सुरक्षा एवं नागरिकों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर करता रहता है।
- लोकतंत्र देश के नागरिकों को सरकार चुनने उन पर दबाव बनाने और साथ ही नागरिकों को अपनी आवश्यकताओं के लिए आवाज उठाने की शक्ति प्रदान करता है।
- लोकतंत्र व कल्याणकारी राज्य एक-दूसरे को मजबूती प्रदान करते हैं। कल्याणकारी राज्य की नीतियाँ जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
- देखा जाए तो एक विकासशील देश में राज्य एक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य की भूमि का निभाता है।
- एक लोकतांत्रिक शासन यह स्पष्ट करता है कि संसाधनों का विभाजन और उनका उपयोग पारदर्शी हो, जो आर्थिक स्थिरता और विकास को बढ़ावा देता है।
- एक लोकतांत्रिक देश में सरकारें शिक्षा, बुनियादी ढाँचे और स्वास्थ्य जैसे सार्वजनिक वस्तुओं में अपना निवेश कर सकती है, जो एक लम्बे समय तक के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार से एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में इनका आपसी संबंध बहुत ही गहरा है। ये आपस में एक दूसरे से अलग हो तो एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य की कल्पना करना भी व्यर्थ सा प्रतीत होता है। जिससे ये अपने विकास के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाएँगे। इस प्रकार इनका किसी भी परिस्थिति में संबंध होना आवश्यक है।

चुनौतियाँ

एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य को अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है ये अनेक प्रकार की हो सकती है जैसे—राजनीतिक चुनौतियाँ जिसमें लोक लुभावने वाली राजनीति आती है। सामाजिक चुनौतियाँ जिसमें जातिवाद, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद और सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ आती है। एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य बनने के लिए राज्य को आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य को मजबूत बनाने के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ़ और अधिक कुशल बनाना एक बड़ी चुनौती है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य को सुधारने के लिए अनेक प्रकार की राजनीतिक बाधाएँ सामने आती है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में सरकारी योजनाओं के दुरुपयोग से सरकार की कल्याणकारी

इन योजनाओं के वितरण में बाधा आती है। जिसके कारण संसाधनों का नुकसान होता है।

- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में सामाजिक विषमताएँ व आर्थिक विषमताएँ जैसे कि क्षेत्रवाद व जाति के आधार पर आने वाली असमानताएँ एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य के लक्ष्यों को कमजोर कर देती है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में कल्याणकारी योजनाओं के लिए पर्याप्त धन जुटाने के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती का सामना करने के लिए विशेष रूप से तब जब देश की अर्थव्यवस्था सिकुड़ रही हो या जिसके विकास की गति बहुत ही धीमी है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य बनने में देश के लोगों में जागरूकता की कमी है जिसके कारण देश की जनता कल्याणकारी योजनाओं का लाभ नहीं उठा सकते।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य के सामने एक सबसे बड़ी चुनौती यह भी आती है कि गैर-लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को गिराना, एक संप्रभु और ईसाई शासन व्यवस्था को स्थापित करना, सत्ता के ऊपर से सेना का नियंत्रण समाप्त करना।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में विकास में देश की गरीबी और बेरोजगारी के एक बड़े स्तर पर कल्याणकारी राज्य की योजनाओं और वित्तीय स्थिरता के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती के रूप में उभरकर सामने आती है।
- अशिक्षा भी एक देश को लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य के सामने एक चुनौती के रूप में रोड़ा पैदा करती है। जो देश के लोगों को लोकतंत्र के महत्व को पूरी तरह से समझने से रोकती है और एक देश के आर्थिक-सामाजिक विकास में बाधा डालती है।

समाधान

एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु एक देश के विकास के लिए आने वाली इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें इनके समाधानों को भी निकालना होगा। इन समाधान को इस लेख हम संक्षिप्त रूप से समझने का प्रयास करेंगे जो इस प्रकार है—

- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य के सामने नागरिकों में असमानता, गरीबी और भ्रष्टाचार आदि को चुनौतियों के रूप रूकावट पैदा करती है। जिनका समाधान किया जाना आवश्यक है।
- अशिक्षा, गरीबी और आर्थिक-सामाजिक असमानताओं का समाधान के लिए ग्रामीण व शहरी गरीबों की मुख्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इनसे संबंधित योजनाओं में महत्वपूर्ण अर्थात् आवश्यक बदलाव करना जरूरी है।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में नागरिकों के लिए स्वास्थ्य की देखभाल एवं शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सामाजिक निवेश को पूर्ण करना जिससे समाज के सभी वर्गों के लोगों को लाभ प्राप्त हो सके।
- सामाजिक व राजनीतिक मुद्दे भी एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य को एक चुनौती देते है इनके समाधान के लिए कानूनी उपाय करना जिनसे जाति आधारित भेदभाव के खिलाफ कड़े से कड़े कानूनों को लागू करना जिसके कारण उनको देश में प्रभावी रूप से कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जा सके।
- इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए देश को एक कल्याणकारी राज्य बनाने के लिए सामाजिक मानदंडों को बदलने के लिए पूर्ण प्रयास किया जाना चाहिए।
- एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में सहभागी बजट और शासन में पारदर्शिता के माध्यम से देश के नागरिकों की सक्रिय भूमिका की भागीदारी को प्रोत्साहित करना होगा।
- एक महत्वपूर्ण समाधान के लिए देश में कानूनी वैधता, लोकतांत्रिक जवाबदेही एवं व्यावसायिक सत्यनिष्ठा के सिद्धान्तों को मजबूती प्रदान करनी होगी। इन समाधानों के रूप में देश संघर्षों की मूल तह तक जाकर सामाजिक न्याय, गरीबी उन्मूलन एवं सशक्तिकरण जैसे दीर्घकालिक समाधानों को ढूँढ़ना होगा।

अतः इस प्रकार से एक लोकतांत्रिक, विकासात्मक कल्याणकारी राज्य को अनेक चुनौतियों का समाधान करना होगा। जिनमें

सामाजिक असमानता, नागरिकों में संसाधनों के कुशल वितरण की कमी, भ्रष्टाचार आदि शामिल है इन सभी चुनौतियों के समाधान के लिए प्रौद्योगिकी, मजबूत संस्थागत सुधार के साथ-साथ देश में जन-भागीदारी को बढ़ावा देना बहुत ही जरूरी है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त लेख में भारत को एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य के रूप में समझने का प्रयास किया है। जिसमें सबसे पहले हम एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य की परिभाषा को समझते हुए उनकी विशेषताओं को स्पष्ट रूप से समझा है। इस लेख के निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य में एक घनिष्ठ संबंध है। इनकी अलग-अलग रूप में कल्पना करना समय की बरबादी होगी जिससे स्पष्ट है कि ये एक-दूसरे के बिना अधूरे है। इनके आपसी संबंध के बिना कोई भी देश एक विकसित लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य का संकल्प पूरा नहीं कर सकता। इस लेख में एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य की प्रगति में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करते हुए उनके समाधान को प्रस्तुत किया है। इस प्रकार से हम इस अध्ययन के एक निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि देश की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के सभी वर्गों के नागरिकों को मिलना चाहिए परन्तु इनके लिए लोकतंत्र के राजनीतिक क्षेत्र में हो रही हवाबाजी को छोड़कर हकीकत के स्तर पर कार्य करना होगा। समाज के सभी वर्गों को एक लोकतांत्रिक विकासात्मक कल्याणकारी राज्य के लिए अशिक्षा को दूर कर उनको शिक्षित कर इन योजनाओं के प्रति जागरूक करना होगा जिससे निम्न स्तर के लोगों तक इसका लाभ प्राप्त हो सके। राज्य को गरीबी से पूर्ण मुक्त करने के लिए नई-नई योजनाएँ लाई जाएगी। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत ने अपनी विकासात्मक रणनीति का ढाँचा बनाया गया जिसको हमने इस लेख में समझने की कोशिश की है। भारत में विकासात्मक राज्य के पहले चरण में हम भारतीय राज्यकृत नीति शासन प्रणाली को समझने के लिए भारत राज्य को औद्योगिक भारत बनाने व इसके तीव्र विकास की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रारंभ में सार्वजनिक क्षेत्रों पर बहुत अधिक बल दिया गया। इस प्रकार से इस लेख में देखा गया कि राज्य का चरित्र अब बहुत ज्यादा विकासात्मक हो गया है। देखा गया कि प्रारंभ में भारत आर्थिक विकास के विकासात्मक राज्य की ओर बढ़ने की प्रवृति हमें दिखाई दी। इस लेख में राजनीतिक नेतृत्व के सामाजिक नीतियों में लगातार हस्तक्षेप से प्रस्तुत होता है कि इन कल्याणकारी नीतियों को लागू करने हेतु सार्वभौमिक व नियमों से बंधे होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चौधरी, लाखा राम, भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था, रजत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2008, पृ.सं. 83
2. बसु, दुर्गादास, भारत की संवैधानिक विधि, प्रेंटिस हाल ऑफ इंडिया प्रा.लि., नई दिल्ली, 2006, पृ.सं. 111
3. आलम, जावेद, भारत : आधुनिकता के साथ जीवन, ओयूपी, नई दिल्ली, 1999, पृ.सं. 78
4. अनंत, वी. कृष्णा, स्वतंत्रता के बाद का भारतः भारतीय राजनीति को समझना, पियर्सन लॉन्गमैन, नई दिल्ली, 2010, पृ.सं. 88
5. भादुड़ी, अमित एवं दीपक, द इंटेलिजेंट पर्सन्स गाइड टू लिबरलाइजेशन, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, 1996, पृ.सं. 107
6. भार्गव, राजीव (सं.), भारतीय संविधान की राजनीति और नैतिकता, ओयूपी, नई दिल्ली, 2008, पृ.सं. 90
7. कोठारी, रजनी, राजनीति और जनता : मानवीय भारत की खोज में अजंता, दिल्ली, पृ.सं. 160
8. सेंगर, शैलेन्द्र, भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ, गुंजन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ.सं. 90
9. शर्मा, एच.सी., भारत में शासन और राजनीति, जनशक्ति प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ.सं. 60
10. पाण्डेय, अरुण, हमारा लोकतंत्र और जानने का अधिकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000, पृ.सं. 40
11. पुरी, एस., भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, न्यू एकेडेमिक पब्लिशिंग कम्पनी, जालंधर, 2001, पृ.सं. 115